

# Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the 'Committee on Publication Ethics'

Online ISSN:2584-184X



Research Article

## स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

Jitendra Singh <sup>1\*</sup>, Dr. Shrikant Bhartiya <sup>2</sup>

<sup>1</sup> J.L.N. T.T. College, University of Kota, Kota, Rajasthan, India

<sup>2</sup> Professor J.L.N. T.T. College, University of Kota, Kota, Rajasthan, India

Corresponding Author: \* Jitendra Singh

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.20309074>

सारांश	Manuscript Information
<p>प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति (Scientific Attitude) का तुलनात्मक विश्लेषण करना है। वैज्ञानिक अभिवृत्ति व्यक्ति की वह मानसिक स्थिति है, जो उसे अंधविश्वासों से मुक्त कर तर्कसंगत, वस्तुनिष्ठ एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने में सक्षम बनाती है।</p> <p>प्रस्तुत शोध में विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि (Descriptive Survey Method) का प्रयोग किया गया है। अध्ययन हेतु करियर पॉइंट विश्वविद्यालय के 100 स्नातक विद्यार्थियों (50 छात्र एवं 50 छात्राएं) का चयन प्रतिदर्श (Sample) के रूप में किया गया। डेटा संग्रह के लिए शैलजा भागवत (Shailja Bhagwat) द्वारा निर्मित 'वैज्ञानिक अभिवृत्ति मापनी' (Scientific Attitude Scale) का उपयोग किया गया।</p> <p>अध्ययन के अंतर्गत विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति की तुलना लिंग (छात्र एवं छात्रा) तथा संकाय (विज्ञान एवं कला) के आधार पर की गई। प्राप्त आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण मध्यमान (Mean), मानक विचलन (S.D.) एवं <i>t</i>-परीक्षण (<i>t</i>-test) की सहायता से किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि छात्रों (Mean = 87.98, SD = 10.46) एवं छात्राओं (Mean = 88.72, SD = 8.75) के मध्य वैज्ञानिक अभिवृत्ति में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। दोनों समूहों के मध्य प्राप्त <i>t</i>-value = -0.38 तथा <i>p</i>-value = 0.702 रही, जो 0.05 स्तर से अधिक है। इसी प्रकार विज्ञान संकाय (Mean = 89.14, SD = 9.98) एवं कला संकाय (Mean = 87.56, SD = 9.24) के विद्यार्थियों के मध्य भी वैज्ञानिक अभिवृत्ति में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। दोनों समूहों के मध्य प्राप्त <i>t</i>-value = 0.82 तथा <i>p</i>-value = 0.413 रही, जो 0.05 स्तर से अधिक है।</p> <p>अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति पर लिंग एवं संकाय का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ता है। यह अध्ययन विद्यार्थियों के वैचारिक दृष्टिकोण को समझने तथा शिक्षा के माध्यम से उनमें वैज्ञानिक चेतना के विकास हेतु महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत करता है। साथ ही, यह अध्ययन उच्च शिक्षा में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को सुदृढ़ करने हेतु महत्वपूर्ण शैक्षिक निहितार्थ प्रस्तुत करता है।</p>	<ul style="list-style-type: none"> <li>ISSN No: 2584-184X</li> <li>Received: 04-03-2026</li> <li>Accepted: 15-05-2026</li> <li>Published: 20-05-2026</li> <li>MRR:4(5); 2026: 206-214</li> <li>©2026, All Rights Reserved</li> <li>Plagiarism Checked: Yes</li> <li>Peer Review Process: Yes</li> </ul>
	<p><b>How to Cite this Article</b></p> <p>Singh J, Bhartiya S. स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन. Indian J Mod Res Rev. 2026;4(5):206-214.</p>
	<p><b>Access this Article Online</b></p> <p><a href="http://www.mrrjournal.in">www.mrrjournal.in</a></p>

**मुख्य शब्द:** वैज्ञानिक अभिवृत्ति, स्नातक, शैलजा भागवत मापनी, तुलनात्मक अध्ययन, तर्कशीलता.

## 1. प्रस्तावना

वर्तमान युग विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास का युग है, जिसमें विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति (Scientific Attitude) का विकास शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य बन गया है। वैज्ञानिक अभिवृत्ति केवल वैज्ञानिक ज्ञान का अधिग्रहण नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी मानसिक प्रवृत्ति है जो तर्कशीलता, वस्तुनिष्ठता, जिज्ञासा, उदारता एवं अन्वेषणशीलता जैसे गुणों से परिपूर्ण होती है। यह व्यक्ति को तथ्यों के आधार पर सोचने, प्रमाणों का समालोचनात्मक विश्लेषण करने तथा उचित निर्णय लेने में सक्षम बनाती है।

शिक्षा विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विशेष रूप से स्नातक स्तर वह अवस्था है जहाँ विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमताएँ, तार्किक सोच एवं विश्वास प्रणाली का तीव्र विकास होता है। अतः इस स्तर पर विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है, जिससे उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार एवं समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रसार किया जा सके।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में, यद्यपि शिक्षा के क्षेत्र में अनेक सुधार एवं नीतियाँ लागू की गई हैं, फिर भी समाज में अंधविश्वास, अतार्किक धारणाएँ एवं गैर-वैज्ञानिक प्रवृत्तियाँ अभी भी विद्यमान हैं। ऐसी स्थिति में विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति का विकास अत्यंत आवश्यक हो जाता है, ताकि एक प्रगतिशील एवं ज्ञान-आधारित समाज का निर्माण किया जा सके। उच्च शिक्षण संस्थानों की यह जिम्मेदारी है कि वे विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, तार्किक विश्लेषण एवं प्रमाण-आधारित समझ विकसित करें।

पूर्ववर्ती अध्ययनों से यह संकेत मिलता है कि लिंग, संकाय, सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि एवं शैक्षिक वातावरण जैसे कारक वैज्ञानिक अभिवृत्ति को प्रभावित कर सकते हैं, किन्तु इनके परिणाम एकरूप नहीं हैं। अतः लिंग एवं संकाय के आधार पर वैज्ञानिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि ये कारक विद्यार्थियों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को किस सीमा तक प्रभावित करते हैं।

अतः प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना तथा लिंग (छात्र एवं छात्रा) एवं संकाय (विज्ञान एवं कला) के आधार पर उसके अंतर का विश्लेषण करना है। यह अध्ययन शिक्षकों, पाठ्यक्रम निर्माताओं एवं नीति-निर्माताओं के लिए उपयोगी दिशा-निर्देश प्रदान करेगा, जिससे विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति के विकास को और अधिक सुदृढ़ किया जा सके।

## अनुसंधान अंतर

वैज्ञानिक अभिवृत्ति के संबंध में पूर्ववर्ती अध्ययनों में विद्यार्थियों के विभिन्न स्तरों पर अनेक शोध कार्य किए गए हैं, जिनमें प्रायः माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर अधिक ध्यान केंद्रित किया गया है। स्नातक स्तर के विद्यार्थियों पर किए गए अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित हैं, विशेष रूप से भारतीय उच्च शिक्षा संस्थानों के संदर्भ में।

इसके अतिरिक्त, अधिकांश अध्ययनों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति को एक सामान्य दृष्टिकोण से देखा गया है, जबकि लिंग (छात्र एवं छात्रा) एवं संकाय (कला एवं विज्ञान) जैसे महत्वपूर्ण कारकों के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण अपेक्षाकृत कम किया गया है। जहाँ ऐसे अध्ययन

उपलब्ध हैं, वहाँ उनके निष्कर्ष एकरूप नहीं हैं, जिससे इस विषय में स्पष्टता का अभाव बना हुआ है।

विशेष रूप से करियर पॉइंट विश्वविद्यालय जैसे निजी उच्च शिक्षण संस्थानों के संदर्भ में विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति पर शोध कार्य अत्यंत सीमित पाया जाता है। साथ ही, शैलजा भागवत द्वारा निर्मित 'वैज्ञानिक अभिवृत्ति मापनी' का उपयोग करते हुए समकालीन संदर्भ में किए गए अध्ययन भी कम उपलब्ध हैं।

अतः उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का लिंग एवं संकाय के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करने की आवश्यकता है, जिससे इस क्षेत्र में विद्यमान अनुसंधान अंतर को पूर्ण किया जा सके तथा उच्च शिक्षा में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास हेतु ठोस आधार प्रदान किया जा सके।

## 2. अध्ययन की आवश्यकता

वर्तमान युग विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास का युग है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपना अत्यंत आवश्यक हो गया है। केवल सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि जीवन की वास्तविक समस्याओं का समाधान तर्क, प्रमाण एवं वस्तुनिष्ठता के आधार पर करने की क्षमता भी आवश्यक है। यही क्षमता वैज्ञानिक अभिवृत्ति के माध्यम से विकसित होती है।

भारतीय समाज में आज भी अनेक स्थानों पर अंधविश्वास, रूढ़िवादिता एवं अतार्किक मान्यताएँ विद्यमान हैं, जो सामाजिक एवं बौद्धिक प्रगति में बाधक बनती हैं। ऐसी स्थिति में शिक्षा का दायित्व है कि वह विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति का विकास करे, जिससे वे तार्किक, विश्लेषणात्मक एवं प्रमाण-आधारित सोच विकसित कर सकें।

विशेष रूप से स्नातक स्तर के विद्यार्थी बौद्धिक परिपक्वता के महत्वपूर्ण चरण में होते हैं, जहाँ उनके विचार, दृष्टिकोण एवं निर्णय क्षमता का विकास होता है। अतः इस स्तर पर उनकी वैज्ञानिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है, ताकि यह समझा जा सके कि उच्च शिक्षा प्रणाली विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सोच विकसित करने में कितनी प्रभावी है।

इसके अतिरिक्त, लिंग (छात्र एवं छात्रा) तथा संकाय (कला एवं विज्ञान) जैसे कारक विद्यार्थियों की सोच एवं दृष्टिकोण को प्रभावित कर सकते हैं। अतः यह जानना आवश्यक है कि क्या इन कारकों के आधार पर वैज्ञानिक अभिवृत्ति में कोई अंतर पाया जाता है या नहीं। इससे शिक्षा में समानता एवं प्रभावशीलता को समझने में सहायता मिलती है।

अतः उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर यह अध्ययन अत्यंत आवश्यक हो जाता है, क्योंकि यह न केवल विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति के वर्तमान स्तर को स्पष्ट करता है, बल्कि उच्च शिक्षा में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास हेतु उपयोगी दिशा-निर्देश भी प्रदान करता है।

## 3. अध्ययन का महत्त्व

प्रस्तुत अध्ययन स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति के तुलनात्मक विश्लेषण से संबंधित है, जो वर्तमान वैज्ञानिक एवं तकनीकी युग में अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस अध्ययन का महत्त्व निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है—

### 1. शैक्षिक महत्त्व

यह अध्ययन विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति के स्तर को स्पष्ट करता है, जिससे शिक्षकों को यह समझने में सहायता मिलती है कि विद्यार्थियों में तर्कशीलता, वस्तुनिष्ठता एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण किस स्तर तक विकसित हो पाया है।

### 2. पाठ्यक्रम विकास में सहायक

अध्ययन के निष्कर्ष पाठ्यक्रम निर्माताओं को यह संकेत प्रदान करते हैं कि किस प्रकार पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियों में परिवर्तन कर विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति को और अधिक सुदृढ़ किया जा सकता है।

### 3. नीति-निर्माताओं के लिए उपयोगी

यह अध्ययन शिक्षा नीति-निर्माताओं को उच्च शिक्षा में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास हेतु उपयुक्त योजनाएँ एवं कार्यक्रम बनाने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

### 4. समानता एवं निष्पक्षता का मूल्यांकन

लिंग एवं संकाय के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से यह ज्ञात किया जा सकता है कि क्या शिक्षा प्रणाली सभी विद्यार्थियों के लिए समान रूप से प्रभावी है या नहीं।

### 5. समाज के विकास में योगदान

वैज्ञानिक अभिवृत्ति का विकास समाज में अंधविश्वास एवं अतार्किक मान्यताओं को कम करने में सहायक होता है। यह अध्ययन एक वैज्ञानिक एवं प्रगतिशील समाज के निर्माण में योगदान देता है।

### 6. भविष्य के शोध के लिए आधार

यह अध्ययन भविष्य के शोधकर्ताओं को इस क्षेत्र में आगे के अनुसंधान हेतु एक आधार प्रदान करता है, विशेष रूप से उच्च शिक्षा स्तर पर वैज्ञानिक अभिवृत्ति के संदर्भ में।

### 4. शोध के उद्देश्य और परिकल्पना

#### शोध के उद्देश्य

1. स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति के स्तर का आकलन करना।
2. स्नातक स्तर के छात्रों और छात्राओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति के मध्य अंतर का अध्ययन करना।
3. कला (Arts) एवं विज्ञान (Science) संकाय के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति की तुलना करना।

#### शोध की परिकल्पना

- $H_01$ : स्नातक स्तर के छात्रों और छात्राओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- $H_02$ : कला और विज्ञान संकाय के स्नातक विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में कोई सांख्यिकीय सार्थक अंतर नहीं है।

### 5. शोध विधि

#### 1. शोध का प्रारूप

प्रस्तुत शोध में विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि (Descriptive Survey Method) का प्रयोग किया गया है। यह विधि वर्तमान परिस्थितियों के मापन और तुलना के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है।

#### 2. जनसंख्या एवं प्रतिदर्श

- जनसंख्या: शोध की जनसंख्या में स्नातक स्तर (Undergraduate) के सभी विद्यार्थी शामिल हैं।
- प्रतिदर्श: न्यायदर्श के रूप में 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।
- इसमें 50 छात्र (Boys) और 50 छात्राएँ (Girls) शामिल हैं।
- इसमें 50 विद्यार्थी विज्ञान संकाय (Science) और 50 विद्यार्थी कला संकाय (Arts) के हैं।

#### 3. शोध उपकरण

डेटा संग्रह के शैलजा भागवत द्वारा निर्मित 'वैज्ञानिक अभिवृत्ति मापनी' (Scientific Attitude Scale) का प्रयोग किया गया।

#### 4. सांख्यिकीय प्रविधियाँ

डेटा के विश्लेषण के लिए मध्यमान (Mean), मानक विचलन (Standard Deviation), टी-परीक्षण (t-test) सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया।

#### 5. प्रदत्त संकलन

प्रस्तुत शोध हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए शैलजा भागवत द्वारा निर्मित 'वैज्ञानिक अभिवृत्ति मापनी' (Scientific Attitude Scale) का प्रयोग किया गया है। इसके लिए करियर पॉइंट विश्वविद्यालय में अध्ययनरत स्नातक स्तर के 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

#### 6. अध्ययन की सीमाएं

1. यह अध्ययन केवल करियर पॉइंट विश्वविद्यालय तक सीमित है।
2. इसमें केवल स्नातक स्तर के 100 विद्यार्थियों का ही सैंपल लिया गया है।
3. अभिवृत्ति के मापन के लिए केवल शैलजा भागवत द्वारा निर्मित 'वैज्ञानिक अभिवृत्ति मापनी' (Scientific Attitude Scale) का प्रयोग किया गया।

#### 7. साहित्य समीक्षा

वैज्ञानिक अभिवृत्ति (Scientific Attitude) शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण संकल्पना है, जिस पर विभिन्न शोधकर्ताओं ने अलग-अलग संदर्भों में अध्ययन किया है। प्रस्तुत अध्ययन से संबंधित पूर्ववर्ती शोधों का संक्षिप्त एवं व्यवस्थित विवरण निम्न प्रकार है

Khan एवं Khan (2012) ने माध्यमिक स्तर पर जीव विज्ञान शिक्षण में जांच विधि (Inquiry Method) के प्रभाव का अध्ययन किया। परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि जांच विधि पारंपरिक विधि की तुलना में विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति विकसित करने में अधिक प्रभावी सिद्ध होती है।

Nugraha, Putri एवं Sholihin (2020) ने जूनियर हाई स्कूल के विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं अधिगम शैली के मध्य संबंध का

अध्ययन किया। अध्ययन में वैज्ञानिक अभिवृत्ति और अधिगम शैली के बीच मध्यम स्तर का संबंध पाया गया तथा यह सुझाव दिया गया कि शिक्षण में अधिगम शैली को ध्यान में रखना आवश्यक है।

**Pandiavadivu एवं Sridhar (2016)** के अध्ययन में पाया गया कि लिंग, कक्षा, शिक्षण माध्यम एवं विद्यालय के प्रकार जैसे कारक वैज्ञानिक अभिवृत्ति को प्रभावित करते हैं, जबकि कुछ कारकों का प्रभाव नगण्य पाया गया।

**Suryawati एवं Osman (2017)** ने संदर्भात्मक शिक्षण (**Contextual Teaching Learning**) के प्रभाव का अध्ययन किया, जिसमें पाया गया कि यह विधि विज्ञान उपलब्धि में सुधार लाती है, किन्तु वैज्ञानिक अभिवृत्ति में महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया।

**Miachio एवं Ratna (2021)** के अध्ययन में यह निष्कर्ष निकला कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति औसत स्तर की होती है तथा लिंग एवं विद्यालय प्रकार के आधार पर कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया।

**Roy, Gücyeter एवं Zhang (2017)** ने यह बताया कि वैज्ञानिक अभिवृत्ति जिज्ञासा, प्रयोगशीलता एवं तथ्यों के प्रति विनम्रता जैसे गुणों से संबंधित होती है तथा विद्यालय के प्रकार का इसमें प्रभाव देखा गया, जबकि लिंग के आधार पर अंतर नगण्य पाया गया।

**Sharma (2017)** के अध्ययन में यह पाया गया कि विशिष्ट विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति सामान्य विद्यार्थियों की तुलना में अधिक विकसित होती है।

**Kumar (2018)** ने वैज्ञानिक अभिवृत्ति के विकास में पारिवारिक एवं शैक्षिक वातावरण की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया।

**Rao (2020)** ने शिक्षा प्रक्रियाओं के माध्यम से वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास की आवश्यकता पर बल दिया तथा शिक्षकों की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया।

**Singh एवं Bai (2024)** की व्यवस्थित समीक्षा से यह ज्ञात हुआ कि अधिकांश विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति मध्यम से उच्च स्तर की होती है, किन्तु लिंग, विद्यालय प्रकार एवं पृष्ठभूमि के आधार पर भिन्नताएँ पाई जाती हैं।

**Kapilas एवं Sreedevi (2023)** ने वैज्ञानिक अभिवृत्ति के विकास हेतु शिक्षा प्रणाली, शिक्षकों की भूमिका एवं प्रयोगात्मक शिक्षण की आवश्यकता को महत्वपूर्ण बताया।

**Sharma एवं Yadav (2023)** के अध्ययन में वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सकारात्मक संबंध पाया गया।

**Kaur (2022)** ने वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं पर्यावरणीय व्यवहार के बीच सकारात्मक संबंध स्थापित किया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण व्यापक सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करता है।

**Kaur (2022)** के एक अन्य अध्ययन में मिश्रित शिक्षण (**Blended Learning**) को वैज्ञानिक अभिवृत्ति के विकास में प्रभावी पाया गया।

**Victoria (2022)** के अध्ययन में पाया गया कि विद्यालय का प्रकार वैज्ञानिक अभिवृत्ति को प्रभावित करता है, जबकि लिंग के आधार पर कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया।

**Tiwari एवं Saini (2022)** ने वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं पर्यावरणीय जागरूकता के मध्य सकारात्मक संबंध स्थापित किया।

**Srivastava एवं Kumari (2022)** के अध्ययन में पाया गया कि विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति सामान्य स्तर की होती है तथा इसमें विद्यालय प्रकार एवं क्षेत्रीय पृष्ठभूमि का प्रभाव देखा गया।

**Mishra (2020)** ने वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं शैक्षणिक उपलब्धि के बीच सकारात्मक संबंध स्थापित किया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण विद्यार्थियों की शैक्षिक सफलता को प्रभावित करता है।

**Verma (2019)** के अध्ययन में वैज्ञानिक अभिवृत्ति सभी विद्यार्थियों में सामान्य रूप से पाई गई तथा इसमें लिंग के आधार पर कोई विशेष अंतर नहीं पाया गया।

**Kundu (2018)** ने यह निष्कर्ष निकाला कि वैज्ञानिक अभिवृत्ति औसत स्तर की होती है तथा विद्यालय के प्रकार एवं स्थान के अनुसार इसमें अंतर पाया जाता है।

**Ahuja (2017)** ने वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं विज्ञान उपलब्धि के बीच सकारात्मक संबंध को स्थापित किया।

**Singh एवं Bai (2017)** ने वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं विज्ञान रुचि के मध्य महत्वपूर्ण संबंध पाया।

**Revati एवं Meera (2017)** के अध्ययन में पाया गया कि वैज्ञानिक अभिवृत्ति पर लिंग एवं विद्यालय प्रकार का प्रभाव सीमित होता है।

**Kumar एवं Kumar (2017)** के अनुसार शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में अंतर पाया गया, जिसमें शहरी विद्यार्थियों का स्तर अधिक था।

**Chandel (2016)** ने पाया कि कुछ संदर्भों में लड़कों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति अधिक होती है, जबकि क्षेत्रीय अंतर नगण्य होता है।

**Garg (2014)** ने वैज्ञानिक अभिवृत्ति को विद्यार्थियों की तर्कशीलता एवं निर्णय क्षमता के विकास से जोड़ा।

**Govindarajan (2014)** के अध्ययन में यह पाया गया कि वैज्ञानिक अभिवृत्ति पर विद्यालय एवं सामाजिक परिवेश का प्रभाव पड़ता है।

**Pitafi एवं Farooq (2012)** ने वैज्ञानिक अभिवृत्ति के विभिन्न घटकों का विश्लेषण करते हुए यह पाया कि विद्यार्थियों में इनका स्तर मध्यम होता है

## 8. डेटा टेबल का निर्माण

तालिका 1: लिंग (Gender) के आधार पर तुलना

समूह	N	Mean	SD	t-value	df	p-value	Result
छात्र (Boys)	50	87.98	10.46	-0.38	98	0.702	Not Significant
छात्राएं (Girls)	50	88.72	8.75	-0.38	98	0.702	Not Significant

तालिका 2: संकाय (Stream) के आधार पर तुलना

समूह	N	Mean	SD	t-value	df	p-value	Result
विज्ञान (Science)	50	89.14	9.98	0.82	98	0.413	Not Significant
कला (Arts)	50	87.56	9.24	0.82	98	0.413	Not Significant

## 9. प्रदत्त विश्लेषण एवं व्याख्या

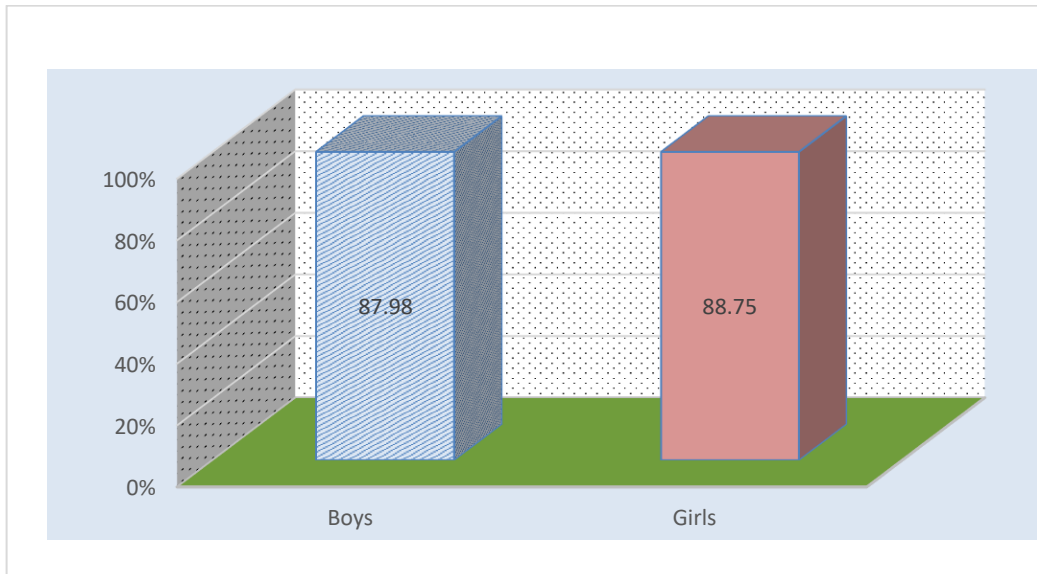
प्रस्तुत अध्ययन में संकलित आंकड़ों का विश्लेषण मध्यमान (Mean), मानक विचलन (Standard Deviation) एवं t-परीक्षण के माध्यम से किया गया। प्राप्त परिणामों की व्याख्या निम्न प्रकार से की जा सकती है—

तालिका 1: लिंग के आधार पर वैज्ञानिक अभिवृत्ति का विश्लेषण तालिका 1 के अनुसार छात्रों (Boys) का मध्यमान 87.98 एवं मानक विचलन 10.46 पाया गया, जबकि छात्राओं (Girls) का मध्यमान 88.72

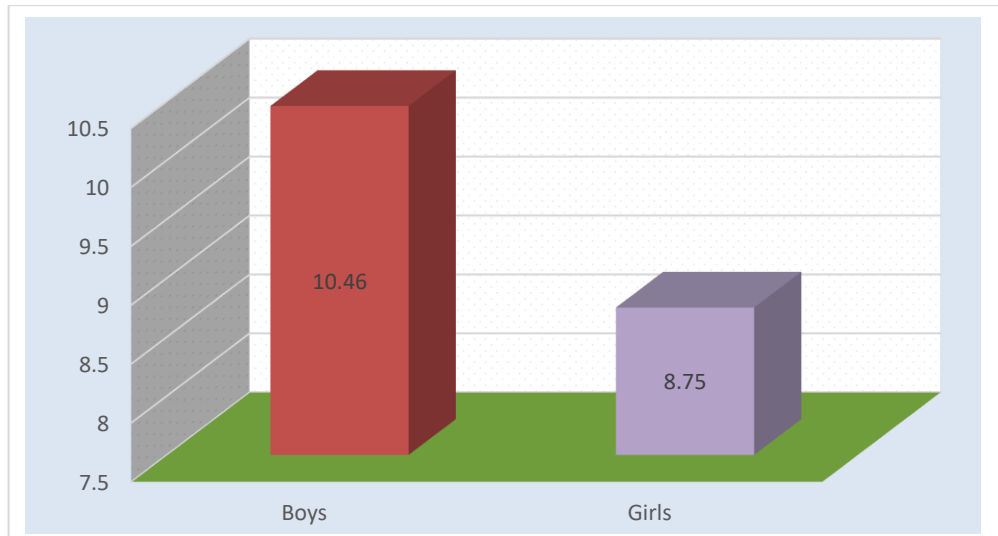
एवं मानक विचलन 8.75 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमान में बहुत कम अंतर पाया गया है।

दोनों समूहों के मध्य प्राप्त t-value = -0.38 तथा p-value = 0.702 है, जो 0.05 स्तर से अधिक है। अतः यह अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं है।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि स्नातक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य परिकल्पना ( $H_0$ ) स्वीकार की जाती है।



आरेख - 1 लिंग के आधार पर वैज्ञानिक अभिवृत्ति का विश्लेषण - मध्यमान



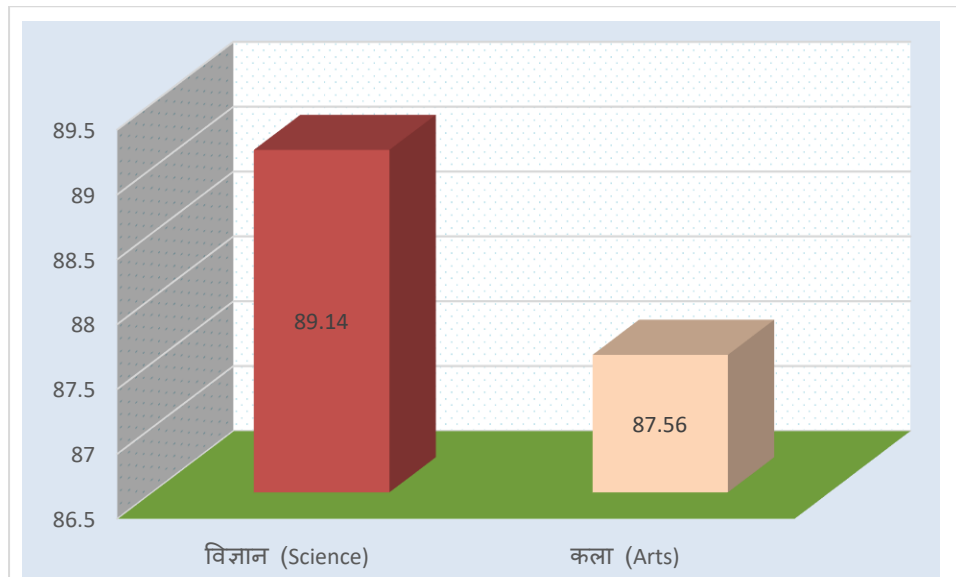
आरेख – 2 लिंग के आधार पर वैज्ञानिक अभिवृत्ति का विश्लेषण - मानक विचलन

### तालिका 2: संकाय के आधार पर वैज्ञानिक अभिवृत्ति का विश्लेषण

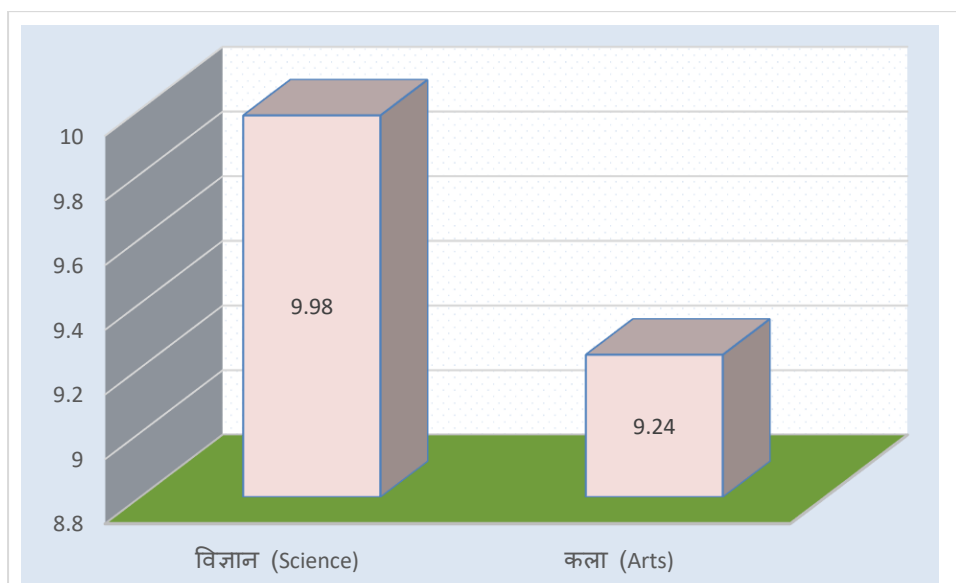
तालिका 2 के अनुसार विज्ञान संकाय (Science) के विद्यार्थियों का मध्यमान 89.14 एवं मानक विचलन 9.98 पाया गया, जबकि कला संकाय (Arts) के विद्यार्थियों का मध्यमान 87.56 एवं मानक विचलन 9.24 प्राप्त हुआ। यद्यपि विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों का मध्यमान थोड़ा अधिक है, किन्तु यह अंतर बहुत अधिक नहीं है।

दोनों समूहों के मध्य प्राप्त  $t$ -value = 0.82 तथा  $p$ -value = 0.413 है, जो 0.05 स्तर से अधिक है। अतः यह अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं है।

इससे यह स्पष्ट होता है कि विज्ञान एवं कला संकाय के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना ( $H_0$ ) स्वीकार की जाती है।



आरेख – 3 संकाय के आधार पर वैज्ञानिक अभिवृत्ति का विश्लेषण – मध्यमान



आरेख – 4 संकाय के आधार पर वैज्ञानिक अभिवृत्ति का विश्लेषण – मानक विचलन

## 10. परिणाम एवं चर्चा

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का लिंग एवं संकाय के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण करना था। प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि छात्रों एवं

छात्राओं के मध्य वैज्ञानिक अभिवृत्ति में कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इसी प्रकार, विज्ञान एवं कला संकाय के विद्यार्थियों के मध्य भी वैज्ञानिक अभिवृत्ति में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया।

लिंग के आधार पर प्राप्त परिणाम यह संकेत करते हैं कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में छात्र एवं छात्राएं समान रूप से वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित कर रहे हैं। यह निष्कर्ष **Miachio एवं Ratna (2021)**, **Verma (2019)** तथा **Revati एवं Meera (2017)** के अध्ययनों के अनुरूप है, जिनमें भी लिंग के आधार पर वैज्ञानिक अभिवृत्ति में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया था। इससे यह स्पष्ट होता है कि आधुनिक शैक्षिक वातावरण में लैंगिक समानता के कारण वैज्ञानिक सोच के विकास में कोई विशेष भिन्नता नहीं रह गई है।

संकाय के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि विज्ञान एवं कला दोनों ही संकायों के विद्यार्थी समान रूप से वैज्ञानिक अभिवृत्ति रखते हैं। यह परिणाम इस धारणा को चुनौती देता है कि केवल विज्ञान संकाय के विद्यार्थी ही अधिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखते हैं। यह निष्कर्ष इस बात की ओर संकेत करता है कि वैज्ञानिक अभिवृत्ति केवल विषय विशेष पर निर्भर नहीं करती, बल्कि यह शिक्षण विधियों, वातावरण एवं व्यक्तिगत अनुभवों से भी प्रभावित होती है।

हालांकि कुछ पूर्ववर्ती अध्ययनों (जैसे **Sharma एवं Yadav, 2023**; **Ahuja, 2017**) में वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सकारात्मक संबंध पाया गया है, किन्तु प्रस्तुत अध्ययन में संकाय के आधार पर कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि वैज्ञानिक अभिवृत्ति का विकास केवल विषय चयन पर निर्भर नहीं

करता, बल्कि यह व्यापक शैक्षिक एवं सामाजिक कारकों से प्रभावित होता है।

इस अध्ययन के निष्कर्ष यह भी संकेत करते हैं कि वर्तमान उच्च शिक्षा प्रणाली विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति के विकास में संतुलित भूमिका निभा रही है। यह स्थिति शिक्षा के लिए सकारात्मक संकेत है, क्योंकि यह दर्शाती है कि सभी विद्यार्थियों को समान अवसर प्राप्त हो रहे हैं।

अतः समग्र रूप से कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति का स्तर समान रूप से विकसित हो रहा है तथा लिंग एवं संकाय जैसे कारकों का इस पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता है। यह परिणाम इस धारणा को चुनौती देता है कि केवल विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों में ही उच्च वैज्ञानिक अभिवृत्ति विकसित होती है।

## 11. शिक्षात्मक निहितार्थ

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित शिक्षात्मक निहितार्थ प्रस्तुत किए जा सकते हैं—

### 1. वैज्ञानिक दृष्टिकोण का समान विकास

अध्ययन में यह पाया गया कि लिंग एवं संकाय के आधार पर वैज्ञानिक अभिवृत्ति में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। इससे यह संकेत मिलता है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास हेतु समान अवसर प्रदान कर रही है। अतः इस प्रवृत्ति को बनाए रखने एवं सुदृढ़ करने की आवश्यकता है।

### 2. सभी विषयों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का समावेश

चूंकि कला एवं विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति का स्तर समान पाया गया है, इसलिए यह आवश्यक है कि सभी विषयों के शिक्षण में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को समाहित किया जाए। इससे विद्यार्थियों में तार्किक एवं विश्लेषणात्मक सोच का विकास होगा।

### 3. शिक्षण विधियों में सुधार

शिक्षकों को ऐसी शिक्षण विधियों (जैसे—अन्वेषणात्मक, प्रयोगात्मक एवं समस्या-समाधान आधारित विधियाँ) का उपयोग करना चाहिए, जो

विद्यार्थियों में जिज्ञासा, तर्कशीलता एवं वैज्ञानिक सोच को प्रोत्साहित करें।

#### 4. आलोचनात्मक चिंतन का विकास

शिक्षा प्रक्रिया में विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने, तर्क करने एवं प्रमाणों के आधार पर निष्कर्ष निकालने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए, जिससे उनकी वैज्ञानिक अभिवृत्ति और अधिक विकसित हो सके।

#### 5. अंधविश्वासों के प्रति जागरूकता

विद्यालय एवं महाविद्यालय स्तर पर ऐसी गतिविधियों का आयोजन किया जाना चाहिए, जो विद्यार्थियों को अंधविश्वासों एवं रूढ़िवादी मान्यताओं से दूर कर वैज्ञानिक सोच अपनाने के लिए प्रेरित करें।

#### 6. शिक्षक की भूमिका

शिक्षक विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अतः उन्हें प्रशिक्षित एवं जागरूक किया जाना चाहिए ताकि वे प्रभावी शिक्षण के माध्यम से विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित कर सकें।

#### 7. पाठ्यक्रम एवं नीति निर्माण में उपयोगिता

अध्ययन के निष्कर्ष पाठ्यक्रम निर्माताओं एवं शिक्षा नीति-निर्माताओं के लिए उपयोगी हैं, जिससे वे ऐसे पाठ्यक्रम एवं योजनाएँ तैयार कर सकें, जो विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति को और अधिक सुदृढ़ करें।

#### 12. आगामी शोध हेतु सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर भविष्य के शोधकर्ताओं के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं—

##### 1. वृहद् नमूना का चयन

यह अध्ययन केवल 100 विद्यार्थियों तक सीमित है। भविष्य में अधिक बड़े एवं विविध नमूने का चयन कर अधिक व्यापक एवं सामान्यीकृत निष्कर्ष प्राप्त किए जा सकते हैं।

##### 2. विभिन्न शैक्षिक स्तरों पर अध्ययन

प्रस्तुत शोध केवल स्नातक स्तर तक सीमित है। भविष्य में प्राथमिक, माध्यमिक एवं स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों पर भी अध्ययन किया जा सकता है, जिससे तुलनात्मक दृष्टिकोण और अधिक स्पष्ट होगा।

##### 3. अन्य कारकों का समावेश

भविष्य के अध्ययन में लिंग एवं संकाय के अतिरिक्त अन्य कारकों जैसे—सामाजिक-आर्थिक स्थिति, पारिवारिक पृष्ठभूमि, विद्यालय/महाविद्यालय का प्रकार (सरकारी/निजी), एवं शहरी-ग्रामीण परिवेश को भी शामिल किया जा सकता है।

##### 4. विभिन्न शिक्षण विधियों का प्रभाव

आगामी शोधों में यह अध्ययन किया जा सकता है कि विभिन्न शिक्षण विधियाँ (जैसे—अन्वेषणात्मक, प्रायोगिक, मिश्रित अधिगम आदि) विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति को किस प्रकार प्रभावित करती हैं।

#### 5. वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं अन्य चर के संबंध का अध्ययन

भविष्य में वैज्ञानिक अभिवृत्ति का अध्ययन शैक्षणिक उपलब्धि, वैज्ञानिक अभिरुचि, वैज्ञानिक स्वभाव एवं रचनात्मकता जैसे अन्य मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक चर के साथ किया जा सकता है।

#### 6. दीर्घकालिक अध्ययन

वैज्ञानिक अभिवृत्ति के विकास को समय के साथ समझने के लिए दीर्घकालिक अध्ययन किए जा सकते हैं, जिससे यह ज्ञात हो सके कि विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण कैसे विकसित होता है।

#### 7. क्षेत्रीय एवं सांस्कृतिक तुलना

भविष्य में विभिन्न राज्यों, क्षेत्रों एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों के विद्यार्थियों के बीच वैज्ञानिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

#### 13. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन “स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के वैज्ञानिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन” का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का विश्लेषण करना तथा लिंग एवं संकाय के आधार पर उसके अंतर का परीक्षण करना था। अध्ययन में विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि का उपयोग करते हुए 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया तथा के. शैलजा भागवत द्वारा निर्मित वैज्ञानिक अभिवृत्ति मापनी के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया।

प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से यह निष्कर्ष सामने आया कि छात्रों एवं छात्राओं के बीच वैज्ञानिक अभिवृत्ति में कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इसी प्रकार, विज्ञान एवं कला संकाय के विद्यार्थियों के मध्य भी वैज्ञानिक अभिवृत्ति में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। इस प्रकार दोनों शून्य परिकल्पनाएँ स्वीकार की गईं।

अध्ययन के परिणाम यह दर्शाते हैं कि वर्तमान उच्च शिक्षा प्रणाली विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति के विकास हेतु समान अवसर प्रदान कर रही है। यह एक सकारात्मक संकेत है कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण अब केवल किसी विशेष वर्ग या विषय तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सभी विद्यार्थियों में समान रूप से विकसित हो रहा है।

अतः समग्र रूप से यह कहा जा सकता है कि वैज्ञानिक अभिवृत्ति का विकास लिंग एवं संकाय जैसे कारकों से अधिक व्यापक शैक्षिक एवं सामाजिक प्रक्रियाओं पर निर्भर करता है। यह अध्ययन उच्च शिक्षा में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को सुदृढ़ करने तथा विद्यार्थियों में तार्किक एवं विश्लेषणात्मक सोच के विकास हेतु उपयोगी दिशा-निर्देश प्रदान करता है।

#### संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Khan M. The development of scientific attitude in secondary school biology teaching. Lang India. 2012;12(5).
2. Nugraha I, Putri NK, Sholihin H. An analysis of the relationship between students' scientific attitude and students' learning style in junior high school. J Sci Learn. 2020;3(3):185-95.
3. Pandiavadivu P, Sridhar R. Measuring students' scientific attitude, aptitude and knowledge at the secondary school

- level: What intended to study and why. *Conflux J Educ.* 2016;4(2).
4. Suryawati E, Osman K. Contextual learning: Innovative approach towards the development of students' scientific attitude and natural science performance. *Eurasia J Math Sci Technol Educ.* 2017;14(1):61-76.
  5. Miachio K, Ratna DS. Scientific attitude among secondary school students of Kohima town. *SSRN Electron J.* 2021.
  6. Kapilas P, Sreedevi PS. Scientific attitude among secondary school students: An exploratory analysis. *Int J Enhanc Res Educ Dev.* 2023;11(5):114-7.
  7. Sharma S, Yadav S. Scientific attitude of secondary school students in relation to their achievement in science. *Int J All Res Educ Sci Methods.* 2023.
  8. Kaur B. Environmental risk perception, environmental ethics, and sustainable consumption practices among senior secondary school students in relation to scientific attitude [doctoral thesis]. Chandigarh: Panjab University; 2022.
  9. Kaur M. Effect of blended learning strategy on learning outcomes and scientific attitude among secondary school students [doctoral dissertation]. Chandigarh: Panjab University; 2022.
  10. Victoria J. Exploring factors affecting scientific attitude in secondary school students: A comprehensive analysis. *Res Highlights Lang Lit Educ.* 2022:38-53.
  11. Tiwari M, Saini M. A comparative study of scientific attitude and environmental awareness among senior secondary school students of Jaipur city. *Int J Creat Res Thoughts.* 2022;10(5):144-51.
  12. Srivastava N, Kumari N. A study of scientific attitude of secondary school students in Patna district. *Int J Multidiscip Educ Res.* 2022;11(7):39-42.
  13. Gangwar S, Singh SP. Madhyamik star ke vidyarthiyon ki vaigyanik abhivritti. *Voices Teach Teach Educ.* 2020;9(1):121-30.
  14. Mishra S. Scientific attitude and academic achievement: A study of secondary school students. *Int J Psychosoc Rehabil.* 2020;24(4):840-7.
  15. Verma A. A comparative study of scientific attitude among class XII students of government and non-government schools in Dehradun city. *J Emerg Technol Innov Res.* 2019;6(5):589-96.
  16. Kundu S. A critical study of scientific attitude among the students of secondary schools. *Harvest J.* 2018;3(2):14-28.
  17. Ahuja A. Study of scientific attitude in relation to science achievement scores among secondary school students. *Educ Quest.* 2017;8(1):9-16.
  18. Singh YC, Bai CA. A comparative study of scientific attitude and science interest of secondary school students. *Int J Res Soc Sci.* 2017;7(12):608-18.
  19. Revati N, Meera KP. An investigation of scientific attitude among secondary school students in Kottayam district of Kerala. *IOSR J Res Method Educ.* 2017;7(1):63-6.
  20. Kumar K, Kumar TR. Scientific attitude among higher secondary students. *Glob J Res Anal.* 2017;6(7):340-1.
  21. Chandel KS. Scientific attitude among senior secondary school students. *Int J Appl Res.* 2016;2(5):572-7.
  22. Garg A. A comparative study of scientific attitude of high and low achievers of secondary schools. *Int J Res.* 2014;1(8):1055-62.
  23. Govindarajan S. A study of scientific attitude among secondary school students. *Shanlax Int J Educ.* 2014;2(3):85-96.
  24. Pitafi AI, Farooq M. Measurement of scientific attitude of secondary school students. *Acad Res Int.* 2012;2(2):379.
  25. Kumar S. Factors affecting the development of scientific attitude among adolescents. 2018.
  26. Sharma M. Scientific attitude among secondary school students: A comparative study. 2017.
  27. Roy P, Güçyeter S, Zhang SZ. Gifted education in India. *Cogent Educ.* 2017;4(1).

#### Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

#### About the Author



**जितेन्द्र सिंह** कोटा विश्वविद्यालय, कोटा (राजस्थान) से शिक्षा शास्त्र में पीएच.डी. शोधरत हैं। आपके प्रमुख शोध क्षेत्र वैज्ञानिक अभिवृत्ति, वैज्ञानिक स्वभाव, शिक्षक शिक्षा एवं भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) हैं। उच्च शिक्षा एवं शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में लगभग 10 वर्षों का अनुभव रखते हैं। राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों, सम्मेलनों तथा शोध गतिविधियों में आपकी सक्रिय सहभागिता रही है। शिक्षा, शोध एवं अकादमिक नवाचार के क्षेत्र में आप निरंतर योगदान दे रहे हैं।



**प्रोफेसर (डॉक्टर) श्रीकांत भारतीय**, प्रोफेसर जवाहरलाल नेहरू टीचर ट्रेनिंग कॉलेज, कोटा, शोध पर्यवेक्षक शिक्षा शास्त्र, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा व काउंसलर वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा। आप शिक्षा शास्त्र शोध के विशेषज्ञ हैं। आपके निर्देशन में अभी तक 10 शोधार्थियों को PhD की उपाधि प्राप्त हुई है। आपके 40 से अधिक शोध लेख व शोध प्रपत्र अंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय जनरल्स में प्रकाशित हुए हैं। अपने 30 से अधिक अंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय संगोष्ठियों में शोध प्रपत्र का पत्र वाचन किया है। आपको 34 वर्ष से अधिक का शिक्षक अनुभव है। शोध द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान कई संस्थाओं ने सम्मानित किया है।